Postal Regd. No. :
HP/115/SML/2020-22
< Postage Prepaid >

www.bakhabarconnect.com

शिमला | मंगलवार | 3 - 9 अगस्त 2022

• वर्ष 8 • अंक 50 • पृष्ठ 4 • साप्ताहिक • मूल्य 1/-
आर.एन.आई. नं. एचपीएमयूएल / 2014/58822

] विचार »

ईश्वर को याद करो
और हमेशा सच बोलो।

- बराक ओबामा

बाख़बर कनेक्ट

@bakhabarconnect

कार्रवाई, सरगोशी से शाया होने तक

वृद्ध लोगों के सहयोग के लिए टोल फ्री नंबर जारी

मुख्यमंत्री ने जिला सोलन के सुबाथू में प्रगतिशील हिमाचल : स्थापना के 75 वर्ष कार्यक्रम की अध्यक्षता की

देवेन्द्र कश्यप
सोलन . बाख़बर कनेक्ट

हिमाचल प्रदेश के अस्तित्व में आने के 75 वर्ष के उपलक्ष्य में प्रगतिशील हिमाचल : स्थापना के 75 वर्ष समारोह के अवसर पर सोलन जिला के कसौली विधानसभा क्षेत्र के सुबाथू में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने एक

विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए सुबाथू में उप तहसील खोलने, गोस्वामी गणेश दत्त सनातन धर्म महाविद्यालय सुबाथू को सरकारी क्षेत्र में अधिग्रहित करने, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सुबाथू को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में स्तरोन्नत करने, ग्राम पंचायत जाडली में स्वास्थ्य उप केंद्र खोलने और राजकीय माध्यमिक पाठशाला कोटी को उच्च पाठशाला में स्तरोन्नत करने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि देश आजादी के 75 वर्ष मना रहा है और हिमाचल प्रदेश भी अपने अस्तित्व के 75 वर्ष मना रहा है। उन्होंने कहा कि देश ने लंबे संघर्ष और अनेक बलिदानों के पश्चात स्वतंत्रता प्राप्त की है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि युवा पीढ़ी को भी हमारे महान स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा दिए गए बलिदानों के बारे में जागरूक किया जाए। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने इस ऐतिहासिक वर्ष को 'आजादी का अमृत महोत्सव' के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने इस अवसर को भव्य तरीके से मनाने के लिए 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अन्तर्गत विभिन्न विभागों के कार्यक्रमों का एक कैलेंडर भी तैयार किया है। जय

शेष पृष्ठ दो पर

इस योजना ने महिलाओं के लिए खोले उद्यमिता के द्वार

प्राकृतिक खेती के प्रशिक्षण केंद्र के रूप में विकसित होगा नौणी विश्वविद्यालय : आर्लेकर

निशा देवी
शिमला . बाख़बर कनेक्ट

राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने डॉ. यशवंत सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी के अंतर्गत कार्यरत क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र मशोबरा में सेब उत्सव का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर राज्यपाल ने फील्ड जीन बैंक संग्रह में प्रदर्शित सेब की विभिन्न किस्मों का अवलोकन किया। उन्होंने प्राकृतिक

शेष पृष्ठ दो पर

प्रधानमंत्री छात्रवृत्ति योजना के लिए पंजीकरण शुरू

राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने राष्ट्रपति से भेंट की

शिमला : राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने राष्ट्रपति भवन,नई दिल्ली में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से भेंट की। यह एक शिष्टाचार भेंट थी।

पर्यावरण संरक्षण के लिए सामूहिक रूप से वृक्षारोपण करें : सुरेश भारद्वाज

ललित कश्यप
शिमला . बाख़बर कनेक्ट

जलवायु संतुलन, पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन के लिए सामूहिक रूप से आगे आकर वृक्षारोपण करें। शहरी विकास, आवास, नगर नियोजन, संसदीय कार्य, विधि एवं सहकारिता मंत्री सुरेश भारद्वाज ने बैनमोर वार्ड में आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम के दौरान यह बात कही। उन्होंने कहा कि विश्व में औद्योगिकीकरण से पर्यावरण पर विपरित प्रभाव पड़ा है,

जिससे प्राकृतिक संचालन में भी व्यवधान उत्पन्न हुआ। साथ ही साथ पूरी दुनिया में ग्रीन गैसिज़ एमिशन की समस्या भी उत्पन्न हुई है। आज गाड़ियों के अधिक प्रयोग से भी जलवायु में असंतुलन बढ़ गया है। उन्होंने कहा कि शिमला में हर वर्ष निश्चित समय में बर्फ तथा बारिश होती रहती थी, जो अब पर्यावरण असंतुलन के कारण निश्चित समय पर नहीं होती है। वर्तमान समय में शिमला शहर की आबादी ढ़ाई से तीन लाख हो चुकी है साथ ही पर्यटन की आमद से यहां की जनसंख्या लगभग 5 से 6 लाख हो जाती है। बढ़ती आबादी को सहुलियत प्रदान करने के उद्देश्य से शिमला स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत अनेकों विकासात्मक कार्य किए गए हैं।

विभिन्न श्रेणियों के 320 पदों पर रोजगार

एसजेवीएन ने महाराष्ट्र में 200 मेगावाट क्षमता की सोलर परियोजना हासिल की

बाख़बर न्यूज
शिमला . बाख़बर कनेक्ट

एसजेवीएन के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक नन्द लाल शर्मा ने बताया कि एसजेवीएन ने महाराष्ट्र राज्य विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड (एमएसईडीसीएल) द्वारा संपन्न की गई ई-रिवर्स ऑक्शन के माध्यम से 200 मेगावाट की सौर ऊर्जा परियोजना हासिल की है।

नन्द लाल शर्मा ने कहा कि एसजेवीएन ने एमएसईडीसीएल की टैरिफ आधारित प्रतिस्पर्धी बोली प्रक्रिया में बिल्ड ओन और ऑपरेट के आधार पर 200 मेगावाट सौर परियोजना 2.90 रूपए प्रति यूनिट की दर पर हासिल की। यह ग्राउंड माउंटेड सोलर प्रोजेक्ट एसजेवीएन द्वारा महाराष्ट्र में कहीं भी ईपीसी अनुबंध के माध्यम से विकसित किया जाएगा। परियोजना के बारे में और जानकारी देते हुए शर्मा ने कहा कि इस परियोजना के निर्माण की संभावित लागत 1200 करोड़ रुपये है। परियोजना एसजेवीएन और एमएसईडीसीएल के बीच शीघ्र ही

हस्ताक्षरित होने वाले बिजली खरीद समझौते पर हस्ताक्षर करने की तारीख से 18 महीने की अवधि के भीतर कमीशन हो जाएगी।

नंद लाल शर्मा ने कहा कि हमारा विजन हरित भविष्य और कार्बन रहित अर्थव्यवस्था के लिए सरकार के विजन के अनुरूप है। इस परियोजना के आबंटन के साथ हमारा सौर और पवन पोर्टफोलियो 3946.5 मेगावाट हो गया है, जिसमें से 104.5 मेगावाट परिचालन में है, 1370 मेगावाट निर्माणाधीन है और 2472 मेगावाट कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में है।

एसजेवीएन तीव्र विस्तार और क्षमतागत वृद्धि के पथ पर अग्रसर है। कंपनी वर्ष 2023 तक 5000 मेगावाट, 2030 तक 25000 मेगावाट और वर्ष 2040 तक 50000 मेगावाट स्थापित क्षमता हासिल करने के लिए पूरी ताकत से आगे बढ़ रही है।

तिरंगे की ताकत : 130 करोड़ भारतीय

. बाख़बर कनेक्ट .

[सम्पादकीय]

श्रीनगर का ट्यूलिप उद्यान सैलानियों का केंद्र

ऐतिहासिक कश्मीर घाटी का नाम बागवानी से जुड़ा है। कश्मीर में हमेशा पुष्प उद्योग की अच्छी संभावनाएं रही हैं। मुगलों के समय में भी कश्मीर में भरपूर बागवानी होती थी और मुगल बादशाहों को खूबसूरत बागों के लिए जाना जाता है। फूल, प्रकृति की अनूठी कृति है, जो लोगों को न केवल खुशबू और नजारे के लिए आकर्षित करते हैं, बल्कि भावनात्मक रूप से भी उनके साथ लगाव हो जाता है। आज कल फूलों का बहुत व्यावसायिक महत्व है और दुनिया भर में इनकी मांग है। कश्मीर घाटी में मौसम की स्थिति और जमीन का उपजाऊपन फूलों की खेती के लिए बहुत ही अनुकूल है। इस कारण बागवानी विभाग श्रीनगर में एशिया का सबसे बड़ा ट्यूलिप उद्यान बना सका है।

विश्व प्रसिद्ध डल झील के किनारे विकसित इंदिरा गांधी मेमोरियल ट्यूलिप उद्यान में टयूलिप की 60 से अधिक किस्में हैं, जिनका हॉलैंड से आयात किया गया है। पहले इस उद्यान को सिराज बाग से नाम से जाना जाता था। यह टयूलिप उद्यान 2008 में खोला गया। टयूलिप उद्यान स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य घाटी में पर्यटकों के मौसम को जल्दी शुरू करना था। यह उद्यान 20 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में फैला हुआ है। इस वर्ष इसका और विस्तार होने की उम्मीद है, क्योंकि ज़बरवान पहाड़ी का और इलाका टयूलिप उद्यान के विस्तार के लिए इस्तेमाल में लाया जा रहा है। इस से न केवल पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, उन स्थानीय युवकों को भी रोजगार मिलेगा, जिन्होंने कृषि और बागबानी से सम्बद्ध क्षेत्रों में डिग्रियां प्राप्त की हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि भूमि की उर्वरकता फूलों की खेती के लिए सर्वोत्तम है, लेकिन फूलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए अधिकारियों द्वारा गंभीर प्रयास करने की आवश्यकता है। विश्व भर के पर्यटक इस उद्यान की सुन्दरता की ओर आकर्षित होते हैं। यहां तक कि कश्मीर घाटी से लौटने के बाद भी पर्यटकों के मस्तिष्क में ट्यूलिप बाग़ की सम्मोहित करने वाली सुन्दरता की याद ताजा बनी रहती है।

|| प्रथम पृष्ठ के शेष >

मुख्यमंत्री ने . . .

राम ठाकुर ने कहा कि हिमाचल प्रदेश का विगत 75 वर्षों में सभी क्षेत्रों में समग्र विकास हुआ है। उन्होंने कहा कि राज्य के गठन के समय प्रदेश में केवल 301 शैक्षणिक संस्थान, 88 स्वास्थ्य संस्थान, 240 रुपये प्रति व्यक्ति आय और 228 किलोमीटर सड़कें थीं, जबकि वर्तमान में 16,124 से अधिक शैक्षणिक संस्थान, 4320 स्वास्थ्य संस्थान, 2,01,854 रुपये प्रति व्यक्ति आय और 39,500 किलोमीटर से अधिक सड़कों का जाल है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के विकास का श्रेय प्रत्येक हिमाचली की कड़ी मेहनत और समर्पण को जाता है जिन्होंने प्रदेश का विकास सुनिश्चित करने के लिए अपना योगदान दिया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि एक समय था जब राज्य के लोग अपनी जान जोखिम में डालकर लकड़ी के बने झूला पुलों से या अन्य जोखिम पूर्ण पारम्परिक माध्यमों से नदी-नालों को पार करने के लिए मजबूर थे, जबकि आज प्रदेशभर को जोड़ने वाले 2326 से अधिक पुल हैं। उन्होंने कहा कि सितम्बर 1972 से अस्तित्व में आने के उपरांत सोलन जिला ने सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की है।

प्राकृतिक खेती . . .

खेती के माध्यम से विकसित किए गए सेब के बगीचे का भी दौरा किया और उच्च घनत्व वाले सेब के उत्पादन की तकनीक की जानकारी ली। उन्होंने केंद्र में औषधीय उद्यान का भी लोकार्पण किया और चिरायता का पौधा रोपित किया। इसके बाद में किसान मेले में बड़ी संख्या में उपस्थित किसानों को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि डॉ. यशवंत सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय को प्राकृतिक खेती के लिए एक प्रशिक्षण केंद्र के रूप में विकसित किया जाएगा, जहां न केवल हिमाचल, बल्कि पूरे देश के किसान और बागवान प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।

मानव जाति का आगमन

प्रेमकुमार मणि

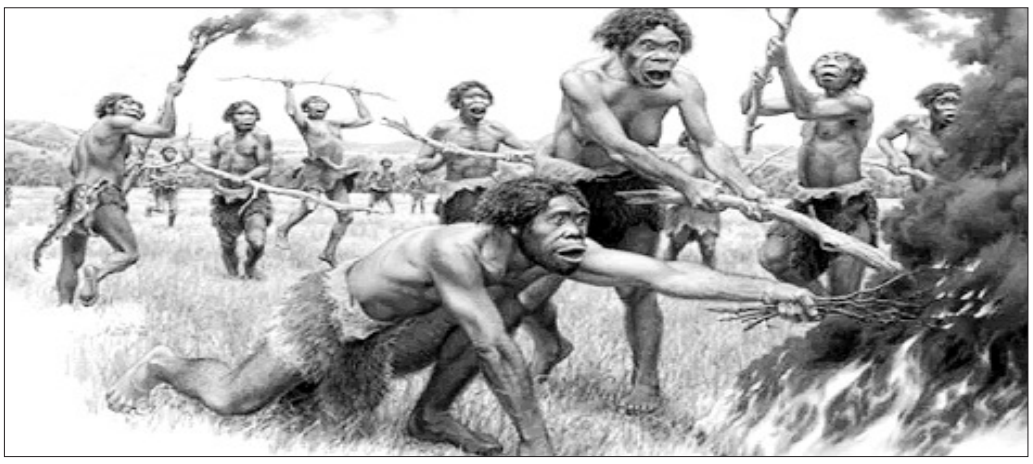

जैसे भिन्न गुणसूत्र के प्राणी आपस में सहवास करके प्रजनन नहीं कर सकते। इससे यह सिद्ध होता है कि जीव विकास की प्रक्रिया को अधिक प्रदूषित नहीं किया जा सकता। अब इस विज्ञान ने काफी प्रगति कर ली है। हम किसी प्राणी के रक्त, मांस, मज्जा या अस्थि का सैंपल लेकर उसके गुणसूत्रों की तलाश कर सकते हैं। इसकी मदद से मानव-शास्त्रियों ने मनुष्य जाति के उद्गम और विकास संबंधी कई गुत्थियों को सुलझा लिया है। इसके साथ लगातार के जीववैज्ञानिक उत्खननों से प्राचीन मानव जाति के कंकाल और फॉसिल्स मिलते रहे हैं। इन सब ने हमें नयी-नयी जानकारियां दी हैं। ये अध्ययन अभी भी चल रहे हैं और कई दफा नए अन्वेषण पुराने को झुठला भी रहे हैं। मानव-शास्त्री इस नतीजे पर आये हैं कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में मनुष्यों के अलग-अलग रूप अवश्य विकसित हुए, लेकिन लगातार की आवाजाही ने बहुत अंशों में पूरी मानव जाति को एक कर दिया है। सबसे प्राचीन मनुष्य का प्रादुर्भाव एक अनुमान से वर्तमान पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका में हुआ। यह इसलिए कि मानव का सबसे प्राचीन जीवाश्म (फॉसिल्स) इस के एक हिस्से इथियोपिया में मिला है। यह लाखों वर्ष पुरानी बात है, जब वहां यह कंकाल एक जीव रूप में चल-फिर रहा होगा। इन्हे मानवशास्त्रियों ने ऑस्ट्रोलिपिथिकस नाम दिया है। इसी से विकसित होते होमो सेपियन्स बने। लेकिन होमो सेपियन्स के अलावा भी होमो अर्थात मनुष्यों की कई प्रजातियां थीं। यूरोप और पश्चिमी एशिया के बड़े भूभाग में होमो सेपियन्स के मुकाबले अधिक मोटे देह-धज वाले निएंडरथलेसिस अथवा निएँडरथल्स थे, तो पूर्वी एशिया में दो पैरों पर सीधे खड़े होने वाले होमो इरेक्टस थे। इंडोनेशिया के द्वीप पर होमो सोलोएनसीस थे तो वहीं फ्लोरेस द्वीप पर आदिम मानव जाति का एक ठिगना रूप होमो फ्लोरोसिएन्सिस भी, जिनकी लम्बाई लगभग एक मीटर की होती थी। फुट के हिसाब से सवा तीन फुट। यह जाति अब विलुप्त हो गयी है, लेकिन इनके बौनेपन और विलुप्त होने की कहानी दर्दनाक है। द्वीप पर जब ये आये थे, तब समंदर आने-जाने लायक था। लेकिन इनके यहां आ जाने के पश्चात समंदर का जलस्तर बढ़ गया और ये लोग यहां घिर गए। यहां खाद्य संसाधनों का अभाव था। इतनी मुश्किलों से लगातार घिरते हुए ये पहले बौने हुए और अंततः ख़त्म हो गए। मनुष्य ने सबसे पहले जो चीजें बनाई होंगी वे थीं नौकाएं, बेड़े, सीने के लिए सुई-डोरे और लड़ने के लिए कुछ हथियार। आग की खोज करने के बाद इन लोगों ने उसे सहेजना सीखा और यह उनकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण खोज थी। कपडे तो बहुत बाद की चीज है, हां, हड्डियों से बने सुई और चमड़े की डोरियों से खाल वगैरह को पहनने लायक पिरोना इनलोगों ने सीख लिया; ताकि भीषण ठण्ड से बचाव हो सके। लेकिन एक जगह टिकना अब तक इन्होंने सीखा नहीं था। लगातार चलते रहने की प्रवृत्ति ने इन्हे यायावर तो बनाया, लेकिन सिखलाया भी बहुत। वे आज के लोगों की तरह घर-घुस्सन और आलसी बिलकुल नहीं थे।

इसी यायावरी प्रकृति के कारण आज से कोई सत्तर हजार या अधिक से अधिक लाख वर्ष पूर्व अफ्रीका के होमो सेपियन्स येन-केन पहले अरब और फिर यूरोप और एशिया के कई हिस्सों में फ़ैल गए। इनके समूह दो हिस्सों में विभाजित हुए। दोनों ने दो दिशाएं पकड़ीं। शायद जिन लोगों ने पूरब की दिशा पकड़ी वे भारतीय उपमहाद्वीप तक पहुंचे। लेकिन क्या जहां ये पंहुचे वे निर्जन स्थान थे? शायद नहीं। इसके पहले भी वहां लोग थे। यूरोप और पश्चिम एशिया में उनका सामना निएंडर्थल्स लोगों से हुआ। भारत में भी स्थानीय लोग होंगे, जिनकी सूचनाएं धीरे-धीरे अनुसंधानों से मिल रही हैं। अब मानवों की दो या अधिक भिन्न प्रजातियों के मिलने से अनुमान लगाया जा सकता है कि क्या सबसे ताकतवर या बर्बर प्रजाति ने अन्य को मार गिराया या बर्बर लोगों को ही होशियार लोगों ने मार गिराया। या कि इन भिन्न प्रजातियों के आपस में सेक्स संबंध स्थापित हुए और गुणसूत्रों की अदला-बदली या क्रान्ति हुई। मेरे अनुमान से दोनों हुए। लड़ाई-झगडे भी हुए और प्रेम-मुहब्बत भी हुए। सब मिला कर प्रेम की जीत होती रही इसकी सूचना हमें आदिवासी लोकगीतों और पौराणिकता के पुनर्पाठ से मिल सकता है। शिव-पार्वती के विवाह का पुनर्पाठ करके, इसका विश्लेषण करके; एक बानगी देख सकते हैं।

मानव-समाज इसी तरह बढ़ता रहा। आज निएँडरथल्स और इरेक्टस समाप्त हो गए। सेपियन्स आगे बढ़कर सेपियन्स सेपियन्स हो गए। यह क्रम चलता रहेगा। लेकिन कब तक? क्या यह क्रम अचानक स्थगित भी हो सकता है? यह एक दुखद सवाल है। लेकिन सवाल तो है ही। सेपियन्स प्रजाति की वर्तमान पीढ़ी में विकास के नाम पर वर्चस्व की जो भूख बढ़ रही है, वह प्रकृति को तो विनष्ट कर ही रही है, यह सूचना भी दे रही है कि मानव जाति का विनाश निकट है। हमने अपने लालच पर लगाम नहीं लगाई तो मानव जाति यानी यह होमो सेपियन्स भी होमो फ्लोरोसिएन्सिस की तरह एक दिन विलुप्त हो जाएगी। समाप्त

साभार : फॉरवर्ड प्रेस डॉट इन

Himachal Pradesh Public Works Department

NOTICE INVITING TENDER

The Executive Engineer, Electrical Division, HP.PWD, Mandi H.P on behalf of Governor of H.P invites the item rate bids, in electronic tendering system for the following works from HPPWD Electrical contractors enlisted in appropriate class as detailed in the table

Sr. No.	Name of Work	Estimated Cost	Earnest Money	Time	Appropriate class of contractor	Tender Cost
1	Construction of Car Parking at Lalit Chowk Sundernagar, Distt. Mandi (HP) (SH: Prov. and fixing railing at Level 890).	4,98,445/-	10,000/-	Two Month	Class - D	350/
2	A/R & M/O to Sanskrit College at Sundernagar, Distt. Mandi (HP) (SH: Prov. and fixing aluminum windows, window shutter, door & repair of toilet in admin block).	4,06,660/-	10,000/-	Three Month	Class-D	350/-
3	RRD on Slapper Tattapani road KM 0/0 to 66/0 (SH: Removal of slips at various RDs between KM 31/400 to 31/460, 31/510 to 31/555 and 33/350 to 33/385)	2,50,673/-	5100/-	Two Month	Class-D	350/-
4	C/o CHC Building at Dehar Tehsil Sundernagar, Distt. Mandi (HP) (SH: P/F iron grating etc.)	1,45,161/-	3,000/-	Two Month	Class - D	350/
5	A/R & M/O residential building under Suket Sub Division at Sundernagar (SH: P/L interlocking paver in front of Type-III, Block near Lalit Chowk at Sundernagar)	4,78,395/-	10,000/-	Three Month	Class -D	350/
6	Construction of Car Parking at Lalit Chowk Sundernagar, Distt. Mandi (HP) (SH: Prov. and fixing railing at Level 893).	4,99,450/-	10,000/-	Three Month	Class-D	350/-
7	C/o missing CD on Sundernagar Meramasit via Khilara road Km 0/0 to 2/500 (SH: C/o 900mm dia RCC hume pipe culvert at RD 2/075 with both side wing wall).	2,12,616/-	5500/-	Three Month	Class-D	350/-
8	RRD on Slapper Tattapani road KM 0/0 to 66/0 (SH: Removal of slips at various RDs between KM 57/615 to 57/660, 57,855 to 57/940, 58/330 to 58/390, 58/530 to 58/580, 58/735 to 58/790 an d59/885 to 59/930).	4,15,902/-	8500/-	Two Month	Class-D	350/-
9	A/R & M/O to Sanskrit College at Sundernagar, Distt. Mandi (HP) (SH: P/L interlocking paver in open yard of admin block).	4,96,611/-	10,000/-	Three Month	Class - D	350/-
10	Construction of Car Parking at Lalit Chowk Sundernagar, Distt. Mandi (HP) (SH: Prov. and fixing railing at Level 896).	4,96,748/-	10,000/-	Two Month	Class -D	350/-
11	Special Repair of Old Horticulture building at Sundernagar (SH: Providing painting distempering etc.)	3,30,906/-	7,000/-	Three Month	Class-D	350/-
12	RRD on Slapper Tattapani road KM 0/0 to 66/0 (SH: Removal of slips at various RDs between KM 40/880 to 40/920.53, 53/350 to 53/450, 55/360 to 55/450 and 55/500 to 55/550).	4,25,444/-	9,000/-	Two Month	Class-D	350/-

Conditions:-

The tender documents shall be sold to only those contractors who fulfill the conditions as under:-

1. Application must be accompanied with EMD. Applications without EMD shall be summarily rejected.
2. The contractors are required to submit the valid enlistment/G.S.T. registration and latest ITR alongwith application form.
3. Conditional and incomplete tenders shall be rejected.
4. The XEN reserves the right to accept or reject the tender without any reason.

R.O. No. 2990/22-23 ***HIM SUCHNA AVAM JAN SAMPARK***

MMSY instilling self-belief in Himachali women, 1969 units set up in the state by women entrepreneurs under the scheme

Women are an integral part of the society and no one can imagine a progressive society without them. Today, women have stepped out of the home and taken the leap towards entrepreneurship. Now, women have not only made their mark in the traditional fields like Banking, Education but they have also registered their strong presence in the challenging field like entrepreneurship.

The Mukhyamantri Swavalamban Yojna (MMSY) launched by the state government is playing a pivotal role in fulfilling dreams of many aspiring women entrepreneurs. With the financial help available under MMSY, women of the state today are moving ahead by establishing their own industrial units. The scheme has strengthened their economic status and also providing employment opportunities to the youth of the state.

MMSY is paving the path for women to adopt entrepreneurship and making them more confident. Under the scheme, a subsidy of 25 percent is being provided to male aspirants for setting up projects up to rupees one crore, while for women, it has been increased from 30 to 35 percent on the same amount. Under the scheme, interest subvention is provided at the rate of 5 percent for three years. Men in the age group of 18 to 45 years and women in the age group of 18 to 50 years are eligible. The government has given 5 years relaxation to women under this scheme besides increasing the subsidy rate.

By giving impetus for promoting entrepreneurship, till now 4,377 units have been established in the state under this scheme and Rs. 200 crore has been spent on subsidy component. A total of 6,927 applications have been approved by the banks in the state. This innovative scheme has given wings to the dreams of 1969 women throughout the state. So far, 273 women of Kangra, 236 of Solan, 215 of Una, 209 of Mandi, 200 women of Sirmaur, 194 of Hamirpur, 184 of Shimla, 171 of Bilaspur, 152 of Kullu, 61 of Chamba, 48 of Kinnaur and 26 women of Lahaul-Spiti have been benefitted under the scheme.

This scheme is also promoting social entrepreneurship by promoting low cost local products and services. Keeping in view the positive outcomes of MMSY, the state government has expanded the ambit of this scheme by including new categories in the year 2021. These include dairy, agro-based tourism, agricultural equipment manufacturing, vegetable nursery, petrol pump, electric vehicle charging station, ambulance service and silk processing etc.

Many women of the state have been benefitted under MMSY and now they are scripting new chapters of success. Suruchi Bhanu, a resident of Bhuntar in Kullu District has embarked her journey on path of self-reliance along with her brother. Under this scheme, she got a loan of about 40 lakh rupees for opening a gymnasium in 2021. Suruchi and her brother have employed two trainers, who are training around 51 youth from the area. Many of them want to join the police or the army. We are earning a monthly income of up to 1.5 lakh rupees from this business, said Suruchi. Expressing gratitude towards the Chief Minister Jai Ram Thakur, she said that MMSY is a positive initiative for encouraging youth towards self-employment.

Sanjana Sharma, a resident of Ratti near Nerchowk of district Mandi is also reaping the benefits of this ambitious scheme of the state government. Sanjana and her family had been settled in Bangalore for a long time. She herself was working as a teacher and dietician, while her husband worked as an engineer there. Sanjana had a long time dream to return home and the MMSY came as a ray of hope. She decided to start her own business.

MMSY proved beneficial for her as a loan of Rs.11.50 lakh has been sanctioned under the scheme for her own restaurant at Ratti. She got a subsidy of Rs. 3.50 from the government. Presently she is earning an income of about 80 thousand rupees per month from the restaurant.

Through this venture, she has also provided employment to 11 people, including three local women. Talking about the scheme Sanjana said that the scheme is playing a vital role in making women atmanirbhar. The scheme has proved a boon to identify the skills of youth and women at large.

These success stories are not only guiding budding women entrepreneurs but at the same time these are powerful testimony to the growth story of Himachal in which women are also playing key roles. New names are getting inscribed in this developmental story, which speaks volumes about the progressive changes which the state is witnessing.

राज्यपाल ने किया आयुष पाठशाला वाटिका अभियान का शुभारंभ

बाख़बर न्यूज
शिमला . बाख़बर कनेक्ट

राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने शिमला के निकट राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला बलदेयां में आजादी का अमृत महोत्सव के तहत 'आयुष पाठशाला वाटिका' अभियान का शुभारंभ किया। शिक्षा विभाग, आयुष विभाग और वन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आरंभ किए गए इस अभियान के अंतर्गत प्रदेश के चयनित 200 स्कूलों में औषधीय वाटिकाएं विकसित की जाएंगी और विद्यार्थियों को औषधीय पौधे वितरित किए जाएंगे। अभियान के शुभारंभ अवसर पर राज्यपाल ने स्कूल परिसर में स्थापित आयुष पाठशाला वाटिका में रखाल और जिंकगो के पौधे भी रोपित किए।

इस अवसर पर राज्यपाल ने शिक्षकों और विद्यार्थियों से कहा कि वे पौधारोपण के बाद उनकी सही देखभाल भी सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि अभियान के तहत इस वर्ष एक लाख पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है, ताकि इनकी उचित देखभाल भी की जा सके। उन्होंने कहा कि बच्चों को औषधीय पौधों की उपयोगिता एवं गुणों से अवगत करवाने के लिए ही इन पौधों के रोपण पर बल दिया जा रहा है। राज्यपाल ने बताया कि प्रदेश में लगभग 600 औषधीय पौधों की पहचान की गई है। इन गुणकारी पौधों का दस्तावेजीकरण किया जाना चाहिए तथा इनसे संबंधित जानकारियां संकलित की जानी चाहिए। इन बहुमूल्य पौधों के संरक्षण की दिशा में कार्य किया जाना चाहिए, ताकि इन्हें विलुप्त होने से बचाया जा सके।

राज्यपाल ने कहा कि 'आयुष पाठशाला वाटिका' अभियान के दौरान लगाए गए पौधों के रख-रखाव की जिम्मेदारी हम सभी की है और इस अभियान की सफलता के लिए हम सभी को मिलकर कार्य करना होगा। इससे पहले शिक्षा विभाग के अतिरिक्त निदेशक संजीव सूद ने राज्यपाल का स्वागत किया। आयुष विभाग के परियोजना अधिकारी उज्ज्वलदीप शर्मा ने औषधीय पौधों से संबंधित जानकारी प्रदान की और शिक्षा विभाग के संयुक्त निदेशक शिक्षा असिथ कुमार मिश्रा ने सबका धन्यवाद किया।

मुख्य सचिव ने की एनपीएस कर्मचारियों की मांगों पर गठित समिति की बैठक की अध्यक्षता

बाख़बर न्यूज
शिमला . बाख़बर कनेक्ट

एनपीएस कर्मचारियों की मांगों पर सरकार द्वारा गठित समिति की बैठक मुख्य सचिव आर.डी. धीमान की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में एनपीएस से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की गई।

बैठक में अवगत करवाया गया कि वर्ष 1971 में हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्यत्व का दर्जा प्राप्त होने के उपरान्त प्रदेश सरकार द्वारा अपने कर्मचारियों के लिए केन्द्र सरकार के सेवा नियम लागू किए गए हैं। हिमाचल और अन्य राज्यों ने केन्द्र सरकार की तर्ज पर राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली अपने कर्मचारियों पर लागू की है। उन्होंने कहा कि लगभग एक लाख 15 हजार एनपीएस कर्मचारियों को वर्तमान प्रदेश सरकार ने वर्ष 2018 के उपरांत अनेक लाभ प्रदान किए हैं।

सरकार द्वारा एक अप्रैल 2019 से सरकारी अंशदान 10 प्रतिशत से बढ़ाकर 14 प्रतिशत किया गया जिससे एनपीएस कर्मियों को 175 करोड़ रुपये सालाना अतिरिक्त लाभ प्राप्त हो रहा है। इससे इन कर्मियों को अधिक पेंशन मिलेगी। एनपीएस कर्मचारियों के लिए सरकार 911 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष अंशदान देगी जो वर्ष 2017-18 में 260 करोड़ रुपये था। राज्य सरकार द्वारा अन्य कर्मचारियों की तर्ज पर एनपीएस कर्मियों को भी अब फैमिली पेंशन/इनवेलिड पेंशन की सुविधा वर्ष 2003 से दी गई है।

बैठक में बताया गया कि वर्तमान सरकार द्वारा वर्ष 2003 से 2017 के बीच छूटे हुए एनपीएस कर्मियों को अन्य कर्मियों की तरह वर्ष 2003 से ग्रेच्युटी का लाभ दिया गया और इस पर 110 करोड़ रुपये व्यय किए गए।

क्षेत्रीय अस्पताल के लिए क्रिटिकल केयर सेंटर स्वीकृत : नैहरिया

बाख़बर न्यूज
धर्मशाला . बाख़बर कनेक्ट

क्षेत्रीय अस्पताल धर्मशाला के लिए क्रिटिकल केयर सेंटर भी स्वीकृत किया गया है इसमें 50 बेड्स की सुविधा उपलब्ध रहेगी। यह जानकारी विधायक विशाल नैहरिया ने शनिवार को रोगी कल्याण समिति की बैठक में देते हुए बताया कि क्षेत्रीय अस्पताल धर्मशाला में बेहतरीन सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए सरकार कृतसंकल्प है।

उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय अस्पताल धर्मशाला में आक्सीजन प्लांट भी स्थापित किया गया है तथा करीब 160 बेड्स को आक्सीजन सप्लाई के साथ जोड़ा गया है ताकि रोगियों को बेहतर सुविधा मिल सके। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि रोगियों के लिए तत्परता के साथ कार्य करें। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय अस्पताल में रिक्त पदों को भरा गया है तथा सभी ओपीडी में अब विशेषज्ञ चिकित्सक उपस्थित रहेंगे। विधायक विशाल नैहरिया ने कहा कि अस्पताल में तामीरदारों के लिए भी बैठने की उचित व्यवस्था भी की जा रही है। इसके साथ ही अस्पताल में रोगियों तथा उनके तामीरदारों के लिए फूड कोर्ट इत्यादि की बेहतर व्यवस्था की भी जाएगी।

इस अवसर पर विधायक विशाल नैहरिया तथा उपायुक्त डा निपुण जिंदल ने अस्पताल में लिफ्ट का भी विधिवत शुभारंभ किया तथा उपायुक्त डा निपुण जिंदल ने बताया कि दूसरी लिफ्ट के लिए भी धनराशि स्वीकृत हो गई है तथा जल्द ही निर्माण कार्य आरंभ हो सकेगा इससे रोगियों को एक फ्लोर से दूसरे फ्लोर तक पहुंचने में बेहतर सुविधा मिलेगी।

کیا کائنات میں انسان واقعی اکیلا ھے؟

انسان نہ جانے کب سے اپنے جیسی کسی دوسری دنیا کی مخلوق کی تلاش کر رہا ہے۔ سائنسداں زمین سے ریڈیائی لہریں بھیج کر دوسری دنیا کی مخلوق سے رابطے کی کوشش کر رہے ہیں۔لیکن اب تک دوسری دنیا کی کسی مخلوق نے کسی بھی انسانی پیغام کا جواب نہیں دیا ہے۔ دوسری دنیا کی مخلوق انسانی پیغامات کا جواب کیوں نہیں دیتیں؟ وہ کہاں ہیں؟ ہیں بھی یا نہیں؟

'وہ کہاں ہیں؟'

یہ سوال معروف ماہر طبیعات ایزکوفرمی نے سنہ 1950 میں اپنے ایک ساتھی سے پوچھا تھا۔فرمی کا خیال تھا کہ انسانوں جیسی بہت سی ذہین تہذیبیں اس کائنات میں مختلف سیاروں پر موجود ہیں۔

لیکن پھر یہ سوال پیدا ہوا کہ اگر وہ ہیں تو ان سے ہمارا رابطہ کیوں نہیں؟ آخر وہ کہاں ہیں؟ سوال بہت مشہور ہوا اور اس پیدا ہونے والے اختلافات کو 'فرمی پیراڈاکس' کے طور پر جانا جاتا ہے۔

ایزیکوفرمی کے تصور کو فرمی تضاد کے نام سے جانا جاتا ہے ایس ای ٹی آء؟ (سیٹی) یعنی 'سرچ فار اکسٹرا ٹریسٹریئل انٹیلیجنس' نامی ادارہ کئی سالوں سے اس کا جواب تلاش کرنے میں مصروف ہے۔

ہماری کہکشاں میں خود کم از کم 100 ارب ستارے ہیں۔آکسفورڈ یونیورسٹی کے تین ماہرین نے حال ہی میں از سر نو متضاد فرمی پیراڈاکس جائزہ لیا ہے۔انھوں نے اس مطالعے کا نام 'ڈزالونگ دی فرمی پیراڈاکس' یعنی فرمی تضاد کا حل رکھا ہے۔مطالعہ میں کہا گیا ہے کہ یہ عین ممکن ہے کہ انسان اس کائنات میں واحد ذہین مخلوق ہے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ کسی ایلیئن کی موجودگی محض خیال خام ہے۔

اس نتیجے تک کس طرح پہنچے؟

اس مطالعے کے تین ماہرین میں سے ایک اینڈرس سینڈ برگ ہیں جو آکسفورڈ یونیورسٹی میں فیوچر آف ہیومینٹی انسٹیٹیوٹ کے ریسرچر ہیں۔دوسرے سائنسدان ایرک ڈیکسلر ہیں جنھیں ان کی نینوٹکنالوجی تصور کے لیے جانا جاتا ہے۔اس کے علاوہ اسی شعبے میں فلسفے کے پروفیسر ٹاڈ اورڈ ہیں۔

صرف ہماری کہکشاں یعنی آکاش گنگا میں ہی 100 ارب سے زیادہ ستارے ہیں اس نئے مطالعہ میں فرمی پیراڈاکس کا ریاضی اصولوں کی بنیاد پر تجزیہ کیا گیا ہے جسے ڈریک ایکوئیشن کہا جاتا ہے۔ڈریک اصول کا پہلے استعمال کیا جاتا تھا۔اس میں ان ممکنہ مقامات کی فہرست تیار کی جاتی تھی جہاں زندگی ہوسکتی ہے۔مطالعہ میں زندگی سے منسلک بہت سے پہلوؤں کی جانچ پڑتال کے بعد یہ پایا گیا کہ 39 فیصد سے 85 فیصد امکانات ہیں کہ انسان کائنات میں واحد ذہین مخلوق ہے۔

تحقیق میں لکھا گیا:'ہم نے تحقیق میں یہ پایا کہ اس بات کا بہت زیادہ امکان ہے کہ کائنات میں کوئی دوسری ذہین تہذیب نہیں ہے۔ایسے میں اگر ہمیں کوئی اشارہ نہیں ملتا،تو ہمیں حیران نہیں ہونا چاہیے۔

اس قدر غیر یقینی صورتحال کی بنیاد پر ہم نے یہ نتیجہ اخذ کیا ہے کہ ہمارے تنہا ہونے کے امکانات بہت زیادہ ہیں۔' بہر حال ان محققین کا یہ بھی خیال ہے کہ سائنسدانوں کو دوسری دنیا میں زندگی اور دوسری دنیا کی مخلوق یا ایلیئنز کی تلاش جاری رکھنا چاہیے۔

سینڈ برگ کہتے ہیں کہ ایلیئنز کے امکانات کم ہونے کے باوجود اگر ہمیں مستقبل میں کبھی یہ پتہ چلے کہ کہیں کوئی ذہین ایلیئن تہذیب ہے تو بھی ہمیں حیران نہیں ہونا چاہیے۔' یعنی بہ الفاظ دیگر فرمی تضاد کا حل اتنا آسان بھی نہیں ہے۔

زریا : بیبیسی اردو

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक **हेमराज हरनोट** द्वारा वायलट हिल, जाखू, शिमला-1 से प्रकाशित एवं **दुर्गा पेपर कन्वर्टरज़**, कांशी भवन, तारादेवी, शिमला-10, जिला शिमला (हि.प्र.) से मुद्रित। सम्पादक : **हेमराज हरनोट।**
बाख़बर कनेक्ट से सम्बन्धित सभी मामलों का निपटारा न्यायिक अधिकार क्षेत्र शिमला में ही होगा। फोन नं. 094185-88654, email: bakhabarconnect@gmail.com, Post Box No. 86, Shimla-1, H.P.

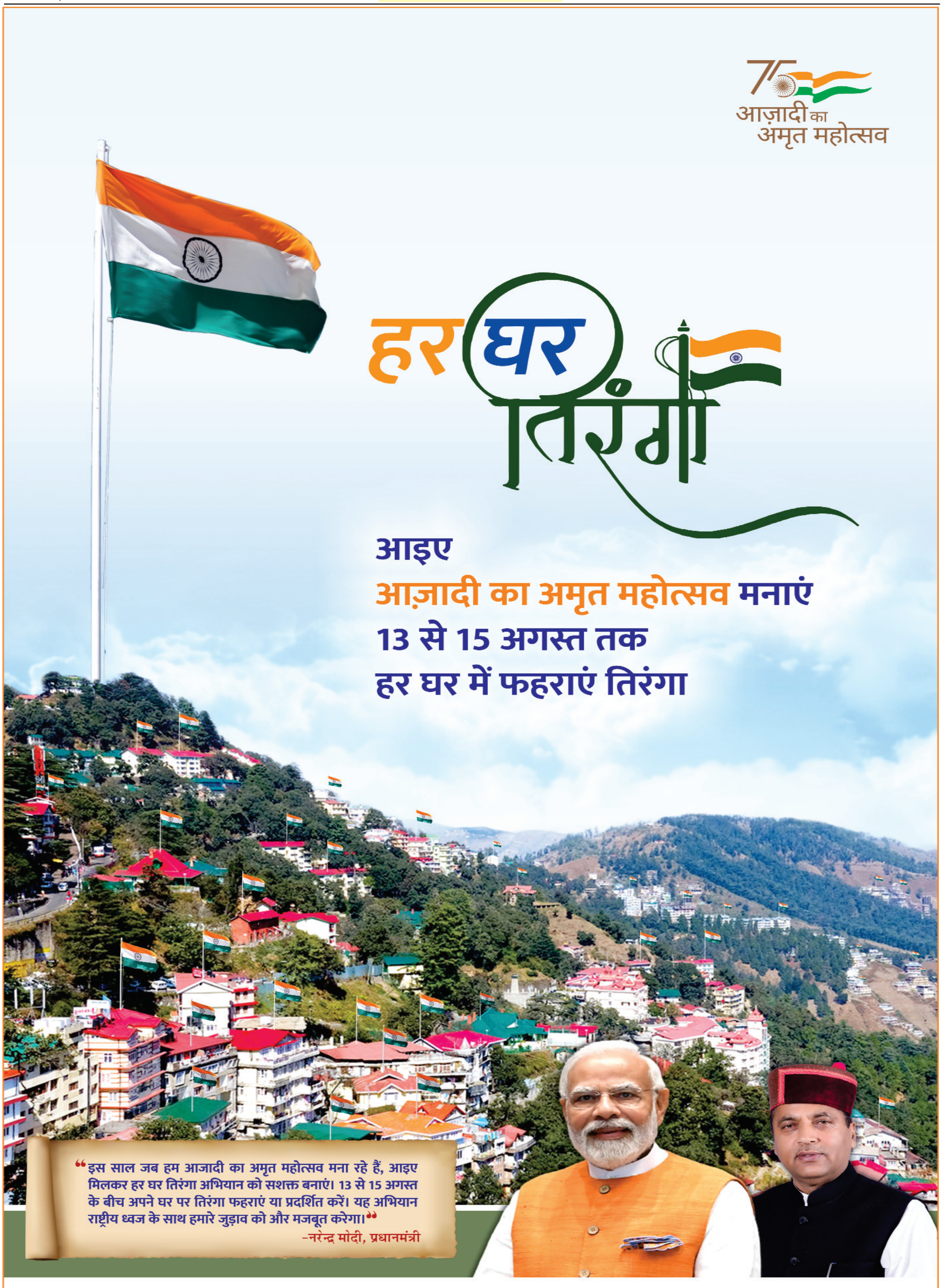
आज़ादी का अमृत महोत्सव
हर घर तिरंगा
आइए
आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएं
13 से 15 अगस्त तक
हर घर में फहराएं तिरंगा
"इस साल जब हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, आइए मिलकर हर घर तिरंगा अभियान को सशक्त बनाएं। 13 से 15 अगस्त के बीच अपने घर पर तिरंगा फहराएं या प्रदर्शित करें। यह अभियान राष्ट्रीय ध्वज के साथ हमारे जुड़ाव को और मजबूत करेगा।"
-नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार
www.himachalpr.gov.in HimachalPradeshGovtIPRDept DPR Himachal dprhp